पुस्तक समीक्षा

काशी मरणान्मुक्ति– श्री मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ द्वारा लिखित इस पुस्तक में जीवन के बहुमूल्य तत्व समाहित है। सगुण और निगुण ईश्वर से साक्षात्कार इस पुस्तक को पढ़कर हो जाता है। कहानी में जहाँ धार्मिकता है वहीं अध्यात्मिकता भी दृष्टिगत होती है। जीवन का अभूत दर्शन इस कहानी में देखने को मिलता है।

कहानी एक ही है और नायक भी एक। किंतु एक ही नायक के ये दो रूप–एक जगत् में ख्यात तो दूसरा अनजाना अज्ञात। एक फूलों से उठती सुगंध, तो दूसरा चिंता में जलते मुर्दों से उठती दुर्गध। एक सूर्य से उजला दिन, तो दूसरा चंद्रविहीन अमावस्या की अँधेरी रात। एक विवाह के मंडप में सजी दुल्हन की चुनरी का रचयिता, तो दूसरा जीर्ण–शीर्ण मल–मूत्र से भी मृतकाया का दाहकर्ता। एक श्री विष्णुरूप रामानंद का शिष्य, तो दूसरा श्री शिवरूप गुरू का चेला। कथा में जितना कथ्य है, उससे कई गुना अधिक अकथ्य।

"जीव जो बने, जैसा बने, योग से बने, तो सत्य और किसी भीषण संकट आने पर भी जो काशी से विलग न होने दे, वही महायोग है। यदि जीव का मरण काशी में होता है, तो वह अमृत अर्थात् मुक्त हो जाता है और यही काशी मरणान्मुक्ति है।"

पुस्तक का नाम– काशी मरणान्मुक्ति
लेखक– मनोज ठक्कर, रशिम छाजेड़
प्रकाशक– शिव ऊँ साई प्रकाशन इंदौर